विचार बिन्दु

उत्साह मनुष्य की भाग्यशीलता का पैमाना है। –तिरुवल्लुवर

यह किताब हमारी पर्यावरणीय समझ को बेहतर बनाती है!

दीप नारायण पाण्डेय के नाम से इस प्रकाशन का कोई भी नियमित पाठक अपरिचित नहीं होगा। विगत कई वर्षों से वे हर रविवार इसी स्थान पर अपने आयुर्वेद के विशद एवं प्रामाणिक ज्ञान से हमें लाभान्वित कर रहे हैं। पाठकों को उनके अतिथि संपादकीय की व्याकुलता से प्रतीक्षा रहती है क्योंकि उसे पढ़कर हम एक अपेक्षाकृत स्वस्थ जीवन शैली की ओर अग्रसर होते हैं। मुझे उनके ये लेख इसलिए भी आकर्षित करते हैं कि वे अतीत की बात तो करते हैं लेकिन उसे केवल भावुकता या मोह के भरोसे नहीं छोड़ देते, उसे तथ्यों और प्रमाणों से पुष्ट भी करते चलते हैं। श्री पाण्डेय का एक परिचय और है। वे राजस्थान में पदस्थापित भारतीय वन सेवा के सर्वोच्च अधिकारी हैं। लेकिन यह परिचय मात्र इतने से ही पूर्ण नहीं हो जाता है। उनके इस परिचय को पूर्ण करने के लिए मैं आज उनकी सद्य प्रकाशित और बहुत तेज़ी से लोकप्रिय हो गई किताब की चर्चा करना चाहता हूं। इस किताब का शीर्षक है–'घर से वन तक।' इसका उप शीर्षक है– 'ट्रॉपिकलड्रायफॉरेस्टरेस्टोरेशन', अर्थात उष्ण कटिबंधीय शुष्क वनों का पुनर्स्थापन। लगभग तीन सौ पृष्ठों की यह किताब प्रतिष्ठित प्रभात प्रकाशन से आई है। इस किताब से गुज़रते हुए हमें डॉ पाण्डेय की अपने काम के प्रति गहरी निष्ठा, उनके गहन अध्ययन, उनकी सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता और अपने परिवेश से उनके बहुत गहरे लगाव का जो परिचय मिलता है, वह उनके परिचय को पूर्णता की तरफ ले जाता है। इतना और जोड़ दूं कि यह पुस्तक उनकी योग्यता और प्रतिभा का मात्र एक आयाम है। उम्मीद करें और आग्रह भी कि बहुत जल्दी हमें उनकी प्रतिभा और विशेषज्ञता के अन्य पक्षों से भी लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा।

स्वाभाविक ही है कि इस किताब के बारे में कुछ और जानने से पहले हम यह जानने को उत्सुक हों कि आखिर उष्णकटिबंधीय शुष्क वन होते क्या हैं? हमारी इस जिज्ञासा को डॉ पाण्डेय इस तरह शांत करते हैं:– "उष्णकटिबंधीय शुष्क वन दुनिया में मुख्यत: उष्णकटिबंधीय पट्टी के तीनों क्षेत्रों – अमेरिका, अफ्रीका और एशिया – में ट्रॉपिकललैटीट्यूड की उस पट्टी में मिलते हैं जहां उच्च तापक्रम होता है, तीन–चार महीने मौसमी वर्षा होती है और शेष महीनों में मौसम सूखा रहता है। सभी प्रकार के उष्णकटिबंधीय वनों का तीस प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल उष्णकटिबंधीय शुष्क वन के रूप में है।" भारत के संदर्भ में डॉ. पाण्डेय बताते हैं कि "भारत में पाए जाने वाले मुख्य 16 प्रकार के वनों में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन सबसे अधिक क्षेत्र में पाए जाते हैं। देश के कुल वन क्षेत्र का 40.86 प्रतिशत उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों से आच्छादित है तथा इनका कुल क्षेत्रफल 3,13,617 वर्ग किमी है। भारत में यही वन सर्वाधिक संकटापन्न हैं और संकट इतना बड़ा है कि भारी प्रयत्नों के बावज़ूदउष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन क्षेत्रों में स्थित दो बाघ अभयारण्यों – सरिस्का और पन्ना से बाघ का स्थानीय विलोपन हुआ था।" डॉ. पाण्डेय ने बहुत महत्वपूर्ण बात यह कही है कि जहां लोग अपनी आजीविका के लिए वनों की तरफ देखते हैं और स्थानीय लोगों और उष्णकटिबंधीय वनों के बीच आदि काल से ही पारस्परिक अंत:क्रिया का रिश्ता रहा है, वहीं वे ही लोग अपनी अनेक गतिविधियों जैसे कृषि, पशु पालन, कटान, अतिक्रमण, खनन आदि से इन वनों को दुष्प्रभावित भी करते हैं। उन्होंने बताया है कि इन शुष्क वनों का लगभग 90 प्रतिशत इन गतिविधियों से दुष्प्रभावित हुआ है। डॉ. पाण्डेय के शब्दों में, "समकालीन स्थिति यह है कि उष्णकटिबंधीय वन जहां भी हैं, वहां पहले से अधिक और जटिल मानवीय हस्तक्षेप भुगत रहे हैं।"

दीर्घकालीन अनुभवों और व्यापक अध्ययन के आधार पर रचित इस पुस्तक में डॉ पाण्डेय ने बहुत अफसोस के साथ यह बात कही है कि हालांकि भारत में वनों की पुनर्स्थापना का बहुत पुराना

एक बहुत ही ख़ास बात यह है कि डॉ. पाण्डेय स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए केवल पेड़-पौधों की ही बात नहीं करते हैं। वे इनके विकास व विस्तार में वन्य प्राणियों की भूमिका को भी उजागर करते हैं और इस बात पर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं कि वन्य प्राणियों का क्षरण भी हमारे पारिस्थितिक तंत्र में आने वाले असंतुलन का एक बड़ा कारण है।

और समृद्ध इतिहास है, आज या तो इस विज्ञान की उपेक्षा होती है या फिर अर्जित अनुभवों से लाभ नहीं उठाया जाता है और जो लोग वनों से दीर्घकाल से जुड़े हुए हैं उनकी ज़रूरतों और अपेक्षाओं की अनदेखी की जाती है। विद्वान लेखक ने बताया है कि भारत में यूएनडिकेडऑनईकोसिस्टमरेस्टोरेशन 2021–2030 के अंतर्गत व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण और वन पुनर्स्थापन प्रस्तावित है। भारत पारिस्थितिक तंत्रों के पुनर्स्थापन के माध्यम से पारिस्थितिक और आर्थिक लाभ को बढ़ाने के लिए बॉनचैलेंज और संयुक्त राष्ट्र संघ के पारिस्थितिक तंत्र पुनर्स्थापन दशक 2021–2030 का एक सदस्य है और वर्ष 2030 तक 26 मिलियन हेक्टेयर बिगड़ी भूमि को सुधारने का लक्ष्य सामने रखे हुए है। लेकिन दिक्कत की बात यह है कि भारत में वनों के पुनर्स्थापन की बजाय वृक्षारोपण पर ज़ोर दिया जा रहा है और वृक्षारोपण भी तकनीकी रूप से ठीक तरह से नहीं हो रहा है जिससे आर्थिक संसाधन बरबाद हो रहे हैं।

इस किताब में डॉ. पाण्डेय अपने विशद अध्ययन के आधार पर वर्तमान स्थितियों को ध्यान में रखते हुए और आज की ज़रूरतों को समझते हुए प्रकृति और मानव के बीच के रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए पुनर्स्थापन (रेस्टोरेशन) और पुनर्वन्यकरण (रीवाइल्डिंग) की बात करते हैं। वे समग्रता में पुनर्स्थापन की बात करते हैं, जो बहुत व्यावहारिक है। उनका यह भी विचार है कि ये सारे काम केवल वनों में ही नहीं, घरों में भी होने चाहिएं, तभी अपेक्षित परिणाम मिल सकेंगे। एक बहुत ही ख़ास बात यह है कि डॉ. पाण्डेय स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए केवल पेड़–पौधों की ही बात नहीं करते हैं। वे इनके विकास व विस्तार में वन्य प्राणियों की भूमिका को भी उजागर करते हैं और इस बात पर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं कि वन्य प्राणियों का क्षरण भी हमारे पारिस्थितिक तंत्र में आने वाले असंतुलन का एक बड़ा कारण है। क्योंकि यह एक विशेषज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक है, इसमें बहुत सारी सूक्ष्म तकनीकी चर्चा भी है, जैसे डॉ. पाण्डेय यह सवाल उठाते हैं कि वन पुनर्स्थापन अच्छा है या वृक्षारोपण? हममें से शायद ही किसी का ध्यान इस बारीक बात की तरफ गया हो। वे अनेक प्रामाणिक अध्ययनों का हवाला देकर बताते हैं कि केवल वृक्षारोपण अपने आप में पर्याप्त नहीं है, इसकी बजाय हमें सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों के लिए बहु–क्रियात्मक वन पुनर्स्थापन पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन इससे यह भी समझ लेना ग़लत होगा कि वृक्षारोपण को त्याग ही दिया जाए। दोनों का अपना–अपना महत्व है और इनके बीच संतुलन बनाए रखना ज़रूरी है।

डॉ. पाण्डेय अपनी बात कहते हुए यथार्थ से कभी मुंह नहीं मोड़ते हैं। मसलन वे स्वीकार करते हैं कि वृक्षारोपण कोई सस्ता काम नहीं है, इसके लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन ज़रूरी होते हैं। इसी तरह वे वृक्षारोपण की बात करते हुए रोपित पौधों की उत्तरजीविता की बात करना भी नहीं भूलते हैं। इतना पर्याप्त नहीं होता है कि वृक्षारोपण करके आंकड़े बढ़ा दिये जाएं। यह भी देखा जाना चाहिए रोपित वृक्ष जीवित भी रहता है या नहीं। विद्वान लेखक का कहना है कि सुमात्रा के उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों में जहां औसत वर्षा 2,456 मिलीमीटर प्रतिवर्ष होती है वहां भी रोपित पौधों की उत्तरजीविता मात्र 41 प्रतिशत है। इसलिए वे हमें समझाते हैं कि वन पुनर्स्थापन के लिए वृक्षारोपण को अंतिम विकल्प के रूप में ही अपनाया जाना चाहिए।

मुझे इस किताब की सबसे ख़ास बात यह लगी कि डॉ. पाण्डेय जो बात कहते हैं उसे प्रमाणों से पुष्ट करते चलते हैं और वे अतिरंजना और अतार्किक आशावाद से बचाते हैं। मसलन वे कहते हैं कि अगर बिगड़े वनों को उसी स्थिति में लाना है जैसे प्राकृतिक वन होते हैं तो इस काम में कम से कम 120 साल लगेंगे और तब भी यह काम 90 प्रतिशत ही हो सकेगा। वे इस बात को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते में अनेक विकृतियां आई हैं और आज प्रकृति का विदोहन पहले से कहीं अधिक हो रहा है। समस्याएं अनेक हैं और उनके कोई सीधे–सरल समाधान नहीं हैं। "उदाहरणार्थ वन पुनर्स्थापन के समय स्थानीय समुदाय पर लगाई गई पाबंदियां आजीविका को संकटग्रस्त कर देती हैं, लेकिन पाबंदियों के बिना दीर्घकालीन पुनर्स्थापन और आजीविका सुधार सम्भव नहीं है।" मुझे इस किताब का निष्कर्ष बहुत शानदार लगा। डॉ. पाण्डेय कहते हैं, "यदि मनुष्य प्रकृति के साथ अपने दुर्व्यवहार को व्यक्तिगत स्तर पर व्यवहार परिवर्तन करते हुए सुधार ले तो वह उस पर्यावरण को नष्ट करने से बचेगा, जिसका वह स्वयं एक अंतर्निहित घटक है।"

यह किताब बहुत सरल नहीं है। इसकी शब्दावली भी तकनीकी है। किताब के लिए जो संदर्भ काम में लिये गए हैं उनमें से अधिकांश विदेशी हैं लेकिन इसके बावज़ूद डॉ. पाण्डेय ने ख़ुद को अंग्रेज़ी मोह से बचाते हुए यह किताब हिंदी में लिखी है, इस बात की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। मेरा विचार है कि हर ज़िम्मेदार नागरिक को इसे पढ़ना चाहिए ताकि वह अपने परिवेश की जटिलताओं को समझ सके, उसके बिगाड़ को रोक सके और उसे बेहतर बनाने की दिशा में सक्रिय हो सके।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय इस शानदार काम के लिए हमारे अभिवादन और कृतज्ञता के पात्र हैं!

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

भारत के मीडिया में एससी, एसटी एवं ओबीसी वर्ग की भागीदारी

डॉ.रमेश बैरवा

- **न्यूजलॉन्ड्री की रिपोर्ट के अनुसार मीडिया के 121 महत्वपूर्ण पदों में से 106 पर उच्च जाति के व्यक्ति हैं**
- **आदिवासी तबके का एक भी व्यक्ति मीडिया के बड़े पदों पर नहीं है**
- **खास चर्चा कार्यक्रम के 70 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति के हैं**

जयपुर, (कासं) । विश्व प्रसिद्ध सामाजिक संस्था ऑक्सफैम इंडिया ने पिछले दिनों भारतीय मीडिया में वंचित जाति समूहों के प्रतिनिधित्व की मौजूदा स्थिति के बारे में " हू टेल्स अवर स्टोरीज मैटर्स : रिप्रेजेण्टेशन ऑफ मारजेनेलाइज्ड कास्ट ग्रुप्स इन इंडियन न्यूजरूम" नामक एक खास रिपोर्ट प्रकाशित की है। यह रिपोर्ट न्यूजलॉन्ड्री नामक प्रसिद्ध डिजिटल मीडिया चैनल ने तैयार की है। रिपोर्ट का मकसद मीडिया में जातिगत वंचना और भेदभाव की स्थिति पर गंभीर विमर्श शुरू करना और मीडिया को समावेशी बनाना है। यह रिपोर्ट बताती है कि आजादी के 75 वर्ष बाद भी भारत के मीडिया में ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य जैसी उच्च जातियों का वर्चस्व कायम है। आदिवासी तबके का प्रतिनिधित्व नगण्य है। दलित तबके के पत्रकार भी बहुत ही कम हैं और जो भी हैं वे अकसर सामाजिक कार्य या राजनीति से जुडे हैं,व्यावसायिक पत्रकार नहीं के बराबर हैं। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को भी कोई खास जगह नहीं मिल पाई है।

न्यूजलॉन्ड्री की यह रिपोर्ट भरपूर सबूतों के साथ बताती है कि दलित, आदिवासी,अन्य पिछडा वर्गों की पहुंच मीडिया में समुचित नहीं है, वह मीडिया जो जनमत तैयार करता है । रिपोर्ट अंग्रेजी एवं हिंदी अखबारों, जिनकी रीडरशिप ज्यादा है, में प्रकाशित खबरों तथा 7 अंग्रेजी टीवी चैनल और इतने ही हिंदी चैनलों पर होने वाले डिबेट पर केंद्रित है। रिपोर्ट बताती है कि प्रधान संपादक,प्रबंध संपादक, कार्यकारी संपादक,ब्यूरो चीफ जैसे 121 महत्वपूर्ण पदों में से 106 पर उच्च जाति के व्यक्ति हैं। दलित, आदिवासी तबके का एक भी व्यक्ति मीडिया के इन बडे पदों पर नहीं है। खास चर्चा के 4 में से 3 एंकर उच्च जाति के हैं। कोई भी दलित,आदिवासी एवं ओबीसी से नहीं है। खास चर्चा कार्यक्रम के 70 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति के हैं। अंग्रेजी अखबारों में मुश्किल से 5 प्रतिशत एवं हिंदी अखबारों में करीब 10 प्रतिशत लेख दलित,आदिवासियों द्वारा लिखे जाते हैं। जाति के बारे में लिखने वाले आधे से ज्यादा उच्च जाति के हैं। करीब 72 प्रतिशत लेख उच्च जाति के व्यक्तियों द्वारा लिखे जाते हैं। 12 पत्रिकाओं के कवर पेज के 972 लेखों में से मात्र 10 लेख ही जाति के बारे में पाए गए हैं।

सीएनएन न्यूज 18, इंडिया टुडे , मिरर नाउ, एनडीटीवी , राज्यसभा टीवी, रिपब्लिक टीवी, टाइम्स नाउ जैसे इंग्लिश टीवी चैनल के बडे पदों पर करीब 90 प्रतिशत उच्च जाति के व्यक्ति हैं। 75 प्रतिशत एंकर उच्च जाति के हैं । इंडिया टुडे के 65, सीएनएन न्यूज 18 के 66 प्रतिशत,एनडीटीवी के 71, राज्यसभा टीवी के 89 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति के हैं। औसतन करीब 55 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति, 6 प्रतिशत दलित, 8 प्रतिशत ओबीसी के हैं। आदिवासी तबके से एक प्रतिशत पैनलिस्ट भी नहीं है। डिबेट के लिए आमंत्रित पैनलिस्ट में शैक्षिक जगत के उच्च जाति के 52 प्रतिशत, दलित 4 प्रतिशत, ओबीसी 21 प्रतिशत हैं। राजनीतिक विश्लेषकों में 49 प्रतिशत उच्च जाति के, 7 प्रतिशत दलित, 11 प्रतिशत ओबीसी हैं। धार्मिक क्षेत्र के पैनलिस्ट में 49 प्रतिशत उच्च जाति के, 4 प्रतिशत दलित, ओबीसी 1 प्रतिशत हैं । पैनलिस्ट में सामाजिक कार्यकर्ता 52 प्रतिशत उच्च जाति के, 3 प्रतिशत दलित, एक प्रतिशत आदिवासी, 5 प्रतिशत ओबीसी हैं । थिंक टैंक के रूप में आमंत्रित पैनलिस्ट में 81 प्रतिशत उच्च जाति के हैं । पैनलिस्ट में स्वयंसेवी संस्थाओं के 50 प्रतिशत एवं पार्टी प्रवक्ताओं में 63 प्रतिशत उच्च जाति के हैं,जबकि दलित 3 प्रतिशत,ओबीसी 5 प्रतिशत तथा आदिवासी शून्य के करीब हैं। हिंदी टीवी चैनलों में से बड़े पदों पर 100 प्रतिशत उच्च जाति के हैं। एंकरों में उच्च जाति 80 प्रतिशत उच्च जाति के एवं ओबीसी के 7 प्रतिशत हैं। आज तक में 73, न्यूज़18 में 64, इंडिया टीवी में 76, एनडीटीवी में 65, राज्यसभा टीवी में 89,रिपब्लिक इंडिया में 74, ज़ी न्यूज़ में 70 प्रतिशत एंकर उच्च जाति के हैं।

औसतन 60 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति,6 प्रतिशत दलित,एक प्रतिशत से भी कम आदिवासी और 8 प्रतिशत ओबीसी के हैं। टीवी चैनल्स पर आमंत्रित राजनीतिक विश्लेषकों में 58 प्रतिशत उच्च जाति, 6 प्रतिशत दलित, 6 प्रतिशत ओबीसी के हैं। डिबेट में आमंत्रित पार्टी प्रवक्ताओं में 60 प्रतिशत उच्च जाति,4 प्रतिशत दलित, 9 प्रतिशत ओबीसी एवं सिर्फ आधा प्रतिशत आदिवासी हैं। शिक्षा जगत से आए पैनलिस्ट में 55 प्रतिशत उच्च जाति, 4 प्रतिशत दलित, 3 प्रतिशत ओबीसी एवं सिर्फ एक प्रतिशत ही आदिवासी हैं। डिबेट में बुलाए सामाजिक कार्यकर्ताओं में से 42 प्रतिशत उच्च जाति, 7 प्रतिशत दलित,10 प्रतिशत ओबीसी एवं सिर्फ 2 प्रतिशत आदिवासी हैं। हिंदुस्तान टाइम्स, इकनॉमिक टाइम्स, द हिंदू , इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, टेलीग्राफ जैसे बड़े अंग्रेजी अखबारों के बड़े पदों पर 92 प्रतिशत उच्च जाति एवं 8 प्रतिशत ओबीसी तबके के हैं । दलित और आदिवासी को कोई जगह नहीं मिल पाई है। इन अखबारों में पैनलिस्ट में 53 प्रतिशत उच्च जाति , 6 प्रतिशत दलित, 8 प्रतिशत ओबीसी एवं सिर्फ एक प्रतिशत आदिवासी हैं।

जाति के मुद्दों पर लिखने वालों में टाइम्स ऑफ इंडिया के 100 प्रतिशत उच्च जाति के हैं। हिंदुस्तान टाइम्स में 24 प्रतिशत उच्च जाति,40 प्रतिशत ओबीसी , 15 प्रतिशत दलित हैं । ऐसे ही इंडियन एक्सप्रेस में 50 उच्च जाति, 20 प्रतिशत ओबीसी, टेलीग्राफ में 86 उच्च जाति एवं 20 ओबीसी हैं। औसतन देखा जाए तो इन अखबारों में लिखने वाले 51 प्रतिशत उच्च जाति , 7 प्रतिशत दलित एवं 6 प्रतिशत ओबीसी के हैं। आदिवासियों की स्थिति शून्य के बराबर है।

दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान , पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका , अमर उजाला, प्रभात खबर जैसे बडे हिंदी अखबारों के बड़े पदों पर 87 प्रतिशत उच्च जाति , 12 प्रतिशत ओबीसी तबके से हैं । दलित, आदिवासी को कोई स्थान नहीं मिल पाया है । इन अखबारों में 56 प्रतिशत पैनलिस्ट उच्च जाति, 8 प्रतिशत दलित ,10 प्रतिशत ओबीसी एवं सिर्फ एक प्रतिशत आदिवासी समुदाय से हैं । जाति के मुद्दों पर लिखने वाले अमर उजाला में 100 प्रतिशत उच्च जाति के हैं । लेखकों में दैनिक भास्कर में 44 प्रतिशत उच्च जाति, 16 प्रतिशत ओबीसी हैं एवं 10 प्रतिशत दलित हैं । हिंदुस्तान टाइम्स में 23 प्रतिशत उच्च जाति,13 प्रतिशत ओबीसी एवं 10 प्रतिशत दलित हैं। नवभारत टाइम्स के लिए लिखने वालों में 76 प्रतिशत उच्च जाति, 8 प्रतिशत दलित, 15 प्रतिशत ओबीसी हैं। राजस्थान पत्रिका के लेखकों में 90 प्रतिशत उच्च जाति एवं 10 प्रतिशत ओबीसी हैं। कुल औसतन 52 प्रतिशत लेखक उच्च जाति, 6 प्रतिशत दलित, 4 प्रतिशत आदिवासी एवं 12 प्रतिशत ओबीसी हैं।

फर्स्टपोस्ट, न्यूजलॉन्ड्री , स्क्रॉल डॉट इन , स्वराज्य , द केन,न्यूज मिनिट ,द प्रिंट,द क्विंट, द वायर, न्यूजलॉन्ड्री हिंदी एवं सत्याग्रह जैसे डिजिटल मीडिया के वेब चैनल के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि डिजिटल मीडिया में भी बड़े पदों पर 84 प्रतिशत उच्च जाति एवं 5 प्रतिशत ओबीसी के हैं। इन चैनल पर पैनलिस्ट में 55 प्रतिशत उच्च जाति , 5 प्रतिशत दलित, 8 प्रतिशत ओबीसी तथा 1 प्रतिशत से भी कम आदिवासी हैं। इनमें जाति के मुद्दों पर लिखने वाले 56 प्रतिशत उच्च जाति , 5 प्रतिशत दलित एवं 10 प्रतिशत ओबीसी हैं। आदिवासी एक भी प्रतिशत नहीं है।

इंडिया टुडे, फ्रंटलाइन, कारवां, फेमिना, बिजनेस टुडे, आउटलुक, स्पोर्ट्स स्टार, तहलका, ऑर्गेनाइजर जैसी पत्रिकाओं के नेतृत्वकारी पदों पर 73 प्रतिशत उच्च जाति , 13 प्रतिशत ओबीसी हैं । दलित, आदिवासी का प्रतिनिधित्व नगण्य है। इनके पैनलिस्ट में 52 प्रतिशत उच्च जाति , 7 प्रतिशत दलित,9 प्रतिशत ओबीसी तथा करीब आधा प्रतिशत ही आदिवासी हैं। डिजिटल मीडिया के इन वेब चैनल्स पर जाति के मुद्दे पर लिखने वालों में करीब 36 प्रतिशत उच्च जाति,10 प्रतिशत दलित,16 प्रतिशत ओबीसी हैं। आदिवासी का प्रतिनिधित्व नगण्य है।

न्यूजलॉन्ड्री द्वारा तैयार की गई तथा ऑक्सफैम इंडिया द्वारा प्रकाशित यह खास रिपोर्ट एक बार फिर साबित करती है कि भारत की मीडिया आबादी के छोटे से हिस्से का ही प्रतिनिधित्व करता है। दलित, आदिवासी और अन्य पिछड़ा वर्ग को समुचित प्रतिनिधित्व नहीं है। आज भी उच्च जातियों का वर्चस्व है। अत: भारत को एक समावेशी, समतामूलक समाज बनाने एवं लोकतंत्र को बेहतर बनाने के लिए यह स्थिति बदलनी चाहिए। उम्मीद है इस दिशा में हम गंभीर मंथन करेंगे, फैसले लेंगे और आगे बढ़ेंगे।

डॉ.रमेश बैरवा
समाज वैज्ञानिक एवं राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर

परिजनों ने अशोक जैन की पार्थिव देह झालावाड़ मैडिकल कॉलेज को दान की

- **सगी दो बहनों ने अपने भाई का देहदान कराया**

भवानीमंडी (निसं)। रविवार सुबह महाराव भीमसिंह अस्पताल में कोटडी गोरधनपुरा निवासी अशोक कुमार जैन का आकस्मिक निधन हुआ। उन्होंने संस्था शाइन इंडिया फाउंडेशन के साथ अपने नेत्रदान का संकल्प पत्र भरा था। जैसे ही उनका निधन हुआ ।

बहन सत्यवती ने सुबह चार बजे शाइन इंडिया फाउंडेशन संस्था को संपर्क कर अपने भाई के नेत्रदान का कार्य संपन्न कराया। उसके उपरांत छोटी बहन सावित्री जैन और मौसेरे भाई जगदीश गुप्ता,भांजे गिरीश गुप्ता की सहमति लेकर देहदान करने का विचार बनाया। देहदान के लिए उन्होंने मेडिकल कॉलेज कोटा की विभागाध्यक्ष डॉ प्रतिमा जायसवाल से अनुरोध किया । परिजनों से बात करने के उपरांत उन्होंने चिकित्सकीय कारण बता कर देहदान के लिए मना कर दिया। परंतु परिजन चाहते थे कि उनके भाई प्रारंभ से ही काफी सेवाभावी रहे हैं उनकी देह मेडिकल कॉलेज को दान की जाए । डॉ. प्रतिमा जायसवाल के मना करने के उपरांत, सत्यवतीजी के अनुरोध पर शाइन इंडिया के डॉ कुलवंत गौड ने झालावाड मेडिकल कॉलेज के डॉ मनोज कुमार शर्मा को देहदान के बारे में पूरी जानकारी दी ।

डॉ मनोज ने प्रधानाचार्य डॉ शिव भगवान शर्मा से सहमति लेने के उपरांत संस्था सदस्यों को अशोक जी का पार्थिव शव झालावाड़ लाने के लिये अनुमति दे दी। अनुमति मिलने के उपरांत परिजनों ने शाम चार बजे अशोक जी का पार्थिव शव झालावाड मेडिकल कॉलेज को सौंप दिया गया।

मैडिकल कॉलेज की घोषणा के तीन वर्ष बाद भी नहीं निकले टेंडर

- **चिकित्सा अधिकारियों की उदासीनता से अटकी कार्यवाही**

जैसलमेर, (नि.सं.)। चिकित्सा के क्षेत्र में पिछड़े सरहदी जिले में मुख्यमंत्री बजट घोषणा में मैडिकल कॉलेज खोलने की घोषणा की गई थी। जैसलमेर के लिहाज से मेडिकल कॉलेज बहुत बड़ी घोषणा थी। जिससे एक बारगी चिकित्सा व्यवस्था से प्रताड़ित लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई।

जिसके बाद करीब तीन साल पहले मुख्यमंत्री द्वारा अन्य जिलों के साथ जैसलमेर में भी मेडिकल कॉलेज की घोषणा की गई। जिससे आमजन में चिकित्सा व्यवस्था सुधरने की उम्मीद जगी लेकिन ना तो अब तक मेडिकल कॉलेज का काम शुरू हुआ और ना ही चिकित्सा व्यवस्थाएं सुधरी। जैसलमेर के जवाहर अस्पताल में पिछले लंबे समय से व्यवस्थाएं बेपटरी है। ग्रामीणों को पहले जिला मुख्यालय और बाद में यहां से रैफर होना पड़ता है। यहां गंभीर बीमारियों से ग्रसित सभी मरीजों का इलाज जोधपुर, अहमदाबाद व जयपुर में चलता है। जैसलमेर में मैडिकल कॉलेज खुलने की स्थिति में यहां पर चिकित्सा संबंधी सभी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। चिकित्सा विभाग के अधिकारियों की उदासीनता के कारण मेडिकल कॉलेज का टेंडर घोषणा के तीन वर्ष बीत जाने के बाद निकालने की तैयारी हो रही है । गौरतलब है कि राज्य

यूरोपियन स्टर्लिंग पक्षी के परिवार ने मोरेल बांध में डेरा डाला

- **कई पक्षियों की आवाज निकालने में माहिर यह पक्षी बहुत सुंदर दिखाई देता है**

लालसोट, (निसं)। विभिन्न प्रकार के संकटग्रस्त श्रेणी सहित ख्यातनाम देसी –विदेशी पक्षियों की शरण स्थली बना मोरेल बांध इन दिनों लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है । यूरोपियन स्टर्लिंग द्वारा मोरेल बांध में डेरा डालने के चलते पक्षी प्रेमियों में विशेष उत्साह नजर आ रहा है । यह पक्षी यहां आने वाले पर्यटकों को खुद की ओर आकर्षित कर रहा है ।

मोरेल बांध पर पक्षियों पर शोध कार्य कर रहे एसोसिएट प्रोफेसर एवं पक्षिविद डा सुभाष पहाड़िया ने बताया कि यूरोपियन स्टार्लिंग को कॉमन स्टर्लिंग भी कहा जाता है। ये पक्षी हजारों की संख्या में एक साथ एक स्थान से दूसरे स्थान की तरफ उड़ते हैं । प्रवासी कॉमन स्टर्लिंग यूरोप, कजाकिस्तान, पाकिस्तान से

लालसोट फोटो 1 व 2 मोरेल बांध पर मोजुद आकर्षक रंग–रूप वाला यूरोपियन स्टर्लिंग।

भारत में प्रवेश करते हैं। कॉमन स्टर्लिंग पक्षी के शरीर का रंग चमकीला काला व चमकीले धातु की चमक जैसा दिखता है। इस पक्षी के पंजे गुलाबी रंग और चोंच का रंग सर्दियों में काला व गर्मियों में पीला हो जाता है । विभिन्न पक्षियों की आवाज निकालने में माहिर यह पक्षी बहुत सुंदर दिखाई देता है।

स्थानीय प्रमुख पक्षी विद डा पहाड़िया ने बताया कि मोरेल बांध के आस–पास अच्छी फसल होने का कारण यह भी की यहां रोजी स्टर्लिंग कॉमन स्टर्लिंग हजारों की संख्या में आती है जो फसलों पर लगने वाले कीट पतंगों को खाती है। देखा जाए तो मोरेल बांध इस समय हजारों ऐसे दुर्लभ पक्षी जो कि इस बांध में सुरक्षित वातावरण के चलते प्रवास कर रहे हैं का गवाह बना हुआ है । यह बांध पक्षी प्रेमियों एवं इन देश–विदेश से आने वाले पक्षियों पर शोध कर रहे लोगों के लिए महत्वपूर्ण साबित हो रहा है । स्थानीय लोगों की मानें तो अगर इस बांध को संरक्षित श्रेणी में लाते हुए इसमें पानी के रिजर्व कैटेगरी को बढ़ा दिया जाए तो यहां पूरे साल देसी –विदेशी प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा रहेगा एवं स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो सकेंगे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 14 नवम्बर, 2022

मार्गशीष मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, पुर्नवसु नक्षत्र दिन 1:15 तक, शुभ योग रात्रि 11:42 तक, गर करण दिन 2:08 तक, चन्द्रमा मंगलवार प्रात: 6:30 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–तुला, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–वृष, बुध–वृश्चिक, गुरू–मीन, शुक्र–वृश्चिक, शनि–मकर, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से 1:15 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 1:15 से सूर्योदय तक है। रवियोग दिन 1:15 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 3:24 से मंगलवार 4:37 तक रहेगी। आज छीट छठ, पं.जवाहरलाल नेहरू जयन्ती, बाल दिवस है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:10 तक, शुभ 9:10 से 10:51 तक, चर 1:31 से 2:52 तक, लाभ–अमृत 2:52 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:49, सूर्यास्त 5:33

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों और मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी और प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है और भागदौड़ बनी रहेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। धार्मिक–सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
अपने आवश्यक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कुंभ
महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।